भैरवी राग के विभिन्न ध्यान व चित्र

डॉ. सविता उप्पल
प्राचार्य, स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज़ कालेज, रायकोट, लुधियाना

भारतीय कलाओं में जितनी समता चित्रकला और संगीत में है, उतनी किसी अन्य कला में देखने को नहीं मिलती। विभिन्न ग्रंथकारों ने 'भैरवी' के विभिन्न ध्यान व चित्र कल्पित किए हैं। उन्हीं ध्यानों को विभिन्न कलाकारों ने अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से चित्रित कर सजीव रूप दिया है। राग 'भैरवी' की अधिकतर ग्रंथकारों तथा संगीतज्ञों ने भगवान शिव की पत्नी 'पार्वती' के रूप में कल्पना की है तथा चित्रकरों ने उसे शिव मन्दिर में भगवान शिव की अर्चना करते हुए दिखाया है।

राजस्थान चित्रकला में विभिन्न संग्रहालयों में विभिन्न रागों के ध्यानों को चित्रित किया गया है। राजस्थानी चित्र शैली के 17वीं और 18वीं सदी के चित्रों को देखने से लगता है कि उस समय तक संगीत शास्त्र में राग–रागिनियों के ध्यान निश्चित कर देने के पश्चात ऐसे ध्यानों में संगीत शास्त्रियों ने उन स्वर समूहों से उत्पन्न प्रभाव और वातावरण के आधार पर अपने भीतर राग की छाया देखी, जिसे श्लोकबद्ध कर उन्होंने राग ध्यान का रूप दिया। अतः राजस्थानी शैली के राग चित्र उन स्वरों से उत्पन्न रस ओर भाव की इस प्रकार की विशेष स्थिति है जिनके आधार पर इन चित्रकारों ने राग चित्रों को बनाया हे।

''प्रचलित रागों में भैरवी, आसावरी, रामकली, गौड़सारंग, ललित, सोरठ, गौरी, वसंत और मल्हार आदि के उत्तम चित्र देखने को मिलते हैं। चित्रकार ने रागात्मक वातावरण उत्पन्न करने के लिए राग ध्यान से अलग हटकर अपनी प्रतिभा और कल्पना से चित्रों को संजीव करने की कोशिश की है।''

राजस्थानीय चित्र कला में विभिन्न रागों का स्वरूप बताते हुए संगत सिंह वर्णन करते हैं।

''आईने–अकबरी' में भी राग–रागिनियों का वर्गीकरण मिलता है। अतः स्पष्ट है कि 15वीं 16वीं शती में राग–रागिनियों के ध्यान निश्चित हुए होंगे। साथ ही साथ 16वीं शती के अंत तक राजस्थानी शैली में नायिक भेद चित्रण की प्रणाली आरंभ हो गई। वस्तुतः 'राममाला' चित्र भी नायिका भेद के अंतर्गत आ जाते हैं। 17वीं शती के अंत और 18वीं के आरंभ में राजस्थानी शैली का पूर्ण विकास मिलता है, जिसका मुख्य केन्द्र मेवाड़ माना जाता है।''

''बीकानेर राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित अन्य शैलियों के अतिरिक्त जयपुर शैली के चित्रों में 18वीं शती के 36 राग रागिनियों का एक संपूर्ण सैट संग्रहालय की चित्रशाला में क्रमानुसार सजा हुआ है। इन सभी चित्रों के ऊपरी भाग में कवित व दोहा अंकित है जिनमें राग–रागिनियों का स्वरूप बड़ा रोचक है। यही नहीं अमुक रागिनी किस राग से संबंधित है और उसका मूल स्वर क्या है अथवा गाने का निश्चित समय क्या है, आदि काव्य में वर्णित है।'' प्रथम राग भैरव में शिव का स्वरूप दिया गया है। भैरव राग की पांच वधुओं के नाम निम्नलिखित दोहे में इस प्रकार हैं–

''भेरवी विरारी कही, मधुमाधवी विचारि।
सैंधवी बंगाली सुनो, ए भैरव की नारि।।

उपर्युक्त दोहे के आधार पर भैरव राग की पांच नायिकाओं का वर्णन अलग–अलग कवित्त में बड़े रोचक ढंग से दिया गया है। कवित के अनुरूप ही चित्र बनाए गए हैं।''

भैरवी : भैरव राग की रागिनी का स्वरूप

''कलाकार ने इस रागिनी में, विशाल नेत्रों वाली सुन्दर और गौरवर्ण युवती को श्वेत ओढ़नी, लाल कंचुकी तथा सुनहरा घाघरा धारण किए हुए दिखाया है। जलाशय के बीच सुनहरे शिव–मन्दिर में श्वेत शिवलिंग स्थापित है और सामने कमलपुष्प पर बैठी नायिका गले में चंपा माला पहने अपने प्रिय शिव को ताल बजाकर प्रसन्न करने में रत है। रागिनी का नियत समय शरद ऋतु का प्रभात है तथा मूल स्वर कवित के अनुसार ' म प ध नि स रे ग' हैं।''

''सुंदरि सुगोरी नैन अति ही विलास बाल बैठी स्वेत पट पर उज्जल सी सारी है।
आंगी लाल चंपक की माल गलि पहरिकै बजावत ताल शिवैरी रीझावत भारी है।।
मध्य महासुरग्रेह याको गुनी जानि लेहु 'म प ध नि स ग' जु गायकै विचारी है।
स्पुरन याकी जाति सरद प्रभात समै। रागनी सु 'भैरव' की नारी है।।''

भावार्थ–रागिनी भैरवी को पूजा अर्चना का राग माना है तथा इस राग की कल्पना पार्वती जी के रूप में की जाती है। एक अन्य विचार अनुसार ''यह भी भोर की रागिनी है। इसमें रागिनी की कल्पना पार्वती के रूप में की जाती है। चित्र में पार्वती को एक सफेद मन्दिर में शिव की पूजा करते दिखाया जाता है। निर्मल प्रेम की यह सुन्दर कल्पना है।''

इस शैली का यदि 'भैरवी' चित्र देखें और 'संगीत कल्पद्रुमांकुर' में दिए गए राग ध्यान से उसका मिलान करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि राजस्थानी चित्रकारी कल्पना की किस ऊंचाई तक पहुंच सकते हैं। भैरवी का ध्यान इस प्रकार है–

''स्फटिकरचितपीठे रम्यकैलासश्रृंगे
विकच कमल पत्रैरर्चयंती महेशम्।
करतलघृत वीणा पीतवर्णायताश्री,
सुकविभिरियमुक्ता भैरवी भैरवस्त्री।''

''लक्षणगीत में भैरवी को प्रथम प्रहर की रागिनी माना गया है। सचमुच इस रागिनी के भीतर जितनी कोमलता है, उतनी ही चंचलता भी। इसीलिए जन मन को यह अपने वश में कर लेती है। चित्रकार ने भी ऐसे मनोहारी दृश्यों को अंकन कर वातावरण को सजीव करने की कोशिश की है, जिसमें उसे सफलता भी मिली है। यदि रागध्यान के आधार पर ही वह चित्र अंकित करता तो निश्चय ही भैरवी का यह सम्मोहक रूप हमारे सामने न आ पाता। चित्र में मानव से लेकर प्रकृति आदि सभी चीजें आलंकारिक सूत्र में एक दूसरे से सुसम्बद्ध होकर हृदय में मधुर भावना का संचार कर रही हैं।

प्रकृति के उल्लसित वातावरण में गान, वाद्य और नृत्य के साथ राग का सम्यक् स्वरूप उपस्थित किया गया है। भैरवी की प्रकृति के अनुसार सरसता के साथ सरलता भी अंकित की गई है। इस चित्र में सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसे देखते ही भैरवी का यह लक्षणगीत स्मरण हो उठता है–

स्थाई : भैरवी कही मन मानी
कोमल सुर कर गावत गुनिजन,
प्रथम पहर की रानी।
अन्तरा : मध्यम वादी, स सम्वादी
भक्ति रस की खानी।
सब कोई गावत, सबको रिझावत,
भैरवी शास्त्र–प्रमानी''

रागमाला में भैरवी रागिनी के रूप का चित्रण इस प्रकार किया है–

भैरवी – ''स्फटिक शिला–निर्मित एक सुन्दर भवन में, जो एक झील के बीच में स्थित है, विशालाक्षी भैरवी रागिनी कमल पुष्पों से शिव की पूजा करती है। उसने अपने गान में शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया है। इस प्रकार की रागिनी है भैरवी।'' भाष्यकार कालिन्द द्वारा लिखित 'संगीत पारिजात' में रागिनी भैरवी का ध्यान इस प्रकार बताया है–

'सरोवरस्थे स्फटिकस्य मण्डपे सरोरूहै : शंकरमर्चयन्ती।
तालप्रभेदप्रतिपन्नगीता, गौरीतनुर्नाम हि भैरवीयम्।।'

अर्थात्– एक सुन्दर तालाब बना है, उसके बीचों–बीच एक स्फटिक मणि (पत्थर) का (जिसमें चश्मे बनते हैं) मण्डप (मन्दिर) बना है। ताल में कमल फूल हुए हैं, उन कमल फूलों को लेकर जो भगवान शंकर की पूजा कर रही है (प्रातः समय है) तालों के प्रभेद (भेद विभेदों) के द्वारा जिसके गीत सम्पन्न हो रहे हैं। अर्थात् उसके गीतों में ताल की मात्रादि विषय का बड़ा हेर–फेर है। अथवा सम, अतीत, अनागत (अनाघात) विषम ग्रहों का चमत्कार है। वह गौरी (पार्वती) समान शरीर वाली (शिवास्वरूपा) भैरवी रागिनी है। इधर प्रातः के 'सन्धि प्रकाश' रागों में गौरी स्वरूपा भैरवी, और उधर सायं के सन्धि प्रकाश रागों में ''गौरी रूपा गौरी'' यह दोनों ही राग पार्वती के बताए जाते हैं। वास्तव में 'भैरव' नाम (भयानक वेषधारी) शंकर का ही है, अतएव भैरवी पार्वती जी के आकार में लिखी है। सर्वमतानुसार संगीत के आदि गुरू या रचयिता शंकर भगवान हैं। अतएव सर्व प्रथम राग 'भैरव' उन्हीं के आकार का है, तथैव भैरवी 'शिक्षा स्वरूपा।'

''शिव पूजत कैलाश पर दुहूं काप में ताल।
श्वेत चीर अंगिया अरून, रूप भैरवी बाल।।

इस प्रकार राग भैरवी का चित्रण बहुत से संगीतज्ञों तथा चित्रकारों ने अपने–अपने ध्यान अनुसार अलग–अलग ढंग से किया है।